D.S (Drama)

Office of the Secretary ... New Delhi
569
3/8/15

First project report

"बिहार राज्य के सीतामढ़ी जिला में मैथिली लोकनाट्य नाच और नाचकर्मियों की दशा और दिशा"

Under the scheme for "Safeguarding the Intangible Cultural Heritage and Diverse Cultural Tradition of India 20014-15

By

Dr. Chandrashekhar prasad

प्रोजेक्ट का पहला चरण लगभग पूरा कर लिया गया है। लेकिन फॉर्म भरने का काम आंशिक हो सका हैं इसकी कई बजहें है।

- मार्च से लेकर अगस्त तक नाच की प्रस्तुति नहीं होती है कारण इन दिनों कोई त्योहार नहीं होता। शादियों में अब नाच की प्रस्तुति नहीं होती क्योंकि अब शादियों में बारात सिर्फ एक रात के लिए ही होता है पहले यह दो रात का होता था। इसलिए इन दिनों कलाकार दिल्ली पंजाब को चले जाते है। नाच मालिकों से पता लगा कि कलाकारों का जुटान मध्य जुलाई से शुरु हो जाता है लेकिन सावन का उत्सव शुरु होने से पहले ये लोग धान की रोपनी में लग जाते है।
- दूसरा, ज्यादातर कलाकार नाच मालिक से उधार रुपया लिए हुए है ऐसे में जब फॉर्म भरने की बात आई तो उन्हें लगा उनके साथ कोई कानूनी कार्यवाही की जा सकती है। बहुत समझाने पर भी न माने तो मैंने ज्यादा दबाव देना उचित नहीं समझा।
- कई नाच मालिक भी घबरा गए कि इसके जरीय उनपर कोई टैक्स लगाने की बात हो सकती है। लेकिन जब इन्हें लगा कि मैं इन्हीं के इलाके का हूं और टैक्स वाली कोई बात नहीं है, तो फिर इनलोगों ने उचित सहयोग किया।

इन कइिनाइयों को ध्यान में रखते हुए मैंने तय किया कि फॉर्म भरने का काम कलाकारों की सहमती से करता रहूंगा।

जगदीश दास नाच पार्टी

ग्राम+पोस्ट – पुरनदाहा, रजवाड़ा पश्चिम, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

यह नाच पार्टी करीब 35 साल से चल रहा है। इसकी स्थपना स्वर्गीय जगदीश दास ने की थी। कुछ साल पहले उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी शिवपती देवी पार्टी का संचालन कर रही है। उनके लिए पार्टी चलाना काफी मुश्किल का काम है लेकिन पति के नाम को ज़िन्दा रखना चाहती है। उनकी कोई औलाद नहीं है। उन्होंने अपनी आपबीती मुझसे साझा किया। उन्होंने बताया कि जब उनके पति ने नाच दल चलाना शुरु किया तो वो अपना दल लेकर छपरा गए थे लेकिन प्रस्तुति जमा नहीं इसलिए आमदनी उतनी ना हो सकी जिससे कलाकारों को उचित मेहताना दे सके। कलाकारों ने उनका साजो सामान घेर लिया। लोगों ने ताना दिया कि "इसके बाप से भी नाच चलने वाला नहीं हैं।" इस बात से आहत होकर शिवपति देवी हमेशा अपने पति के इस काम में साथ देती रही। और अपने जीवित रहते इस नाच दल को चलाना चाहती है।

मलिक – शिवपती देवी, ग्राम+पोस्ट – पुरनदाहा, रजवाड़ा पश्चिम, जिला – सीतामढ़ी, बिहार, फोन – 8434175109

डॉ0 चनद्रशेखर और शिवपति देवी

मैनेजर – कंस राउत , ग्राम+पोस्ट – पुरनदाहा, रजवाड़ा पश्चिम, जिला – सीतामढ़ी, बिहार,

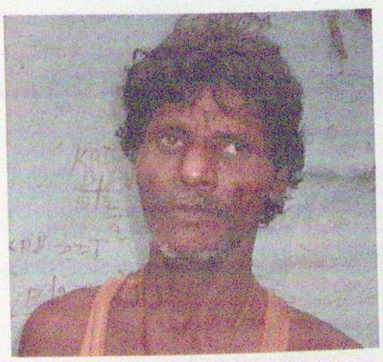

कंस राउत

पार्टी के सदस्य

नाम	काम	पता
देबु राम	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – विश्रामपुर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
अकूब शेख	क्लॉरनेट	ग्राम+पोस्ट – मुसहरनिया, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

नेमधारी	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – सोनबरसा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रामप्रताप	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – चिलड़ी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
सोनफी राउत	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – अररिया, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
शकल राउत	महिला पात्र 'नृत्यांगना'	ग्राम+पोस्ट – जयनगर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रामपुकार पासवान	हास्य कलाकार 'जोकर'	सुखैनिया, नेपाल
भरत पासवान	क्लॉरनेट	सुखैनिया, नेपाल
अज़ीज शेख	अभिनेता	सुखैनिया, नेपाल
अकूब शेख	ढ़ोलक	ग्राम+पोस्ट – बिरसा टोला, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रजन राम	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – बसतपुर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
सलटु पासवान	हारमोनियम	ग्राम+पोस्ट – किशनपुर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

नच दल द्वारा प्रस्तुत्य कथा

- सुरमा सलहेस
- आल्हा उदल
- रुनवा झुनवा
- जया विषहर (most demanded)

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - शिवपती देवी

2.~~Father's~~ Husband's name - स्व० जगदीश दास

3.Address - ग्राम – लालबंदी, पोस्ट – सोनबरसा
थाना – सोनबरसा, जिला – सीतामढ़ी (बिहार)
पिन – 843330 फोन –

4.Specialization in art - मालिक

5. since when 1985 उम्र – 65

6. sources of livelihood केवल नाच

7. special information if/any

Phekhal
Signature of project holder

शिवपती देवि
signature of artist

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - कैस राऊत

2.Father's name - स्व॰ सिंघेसर राऊत

3.Address - ग्राम – पुरनदाहा रजवाड़ा (पश्चिमी)
वार्ड नं॰ - 9, पो॰ - सोनबरसा
थाना - सोनबरसा, जिला - सीतामढ़ी (बिहार)
पिन – 843330,

4.Specialization in art - पुरुष अभिनेता

5. since when 1985 उम्र - 60 वर्ष

6. sources of livelihood ①नाच, ②मजदूरी, ③किसानी

7. special information if/any

Shekhar.
Signature of project holder

signature of artist

जय हनुमान नाच कला परिषद

ग्राम – दलकहवा, पोष्ट – दलकहवा, जिला – सीतामढ़ी, बिहार

इस नाच पार्टी की स्थापना करीब साठ साल पहले स्व0 मरु राय, जो उस समय वहाँ के मुखिया हुआ करते थे, ने शुरु की थी। उनके मरनोपरान्त उनके दो बेटे श्री प्रभु दयाल राय और श्री श्याम किशोर राय एक ही नाम से दो अलग–अलग नाच पार्टी का संचालन कर रहे है।

जय हनुमान नाच कला परिषद, प्रथम

यह पार्टी बड़ा पार्टी के नाम से भी जाना जाता है।

मालिक – प्रभु दयाल राय, ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार, फोन – 9572531675

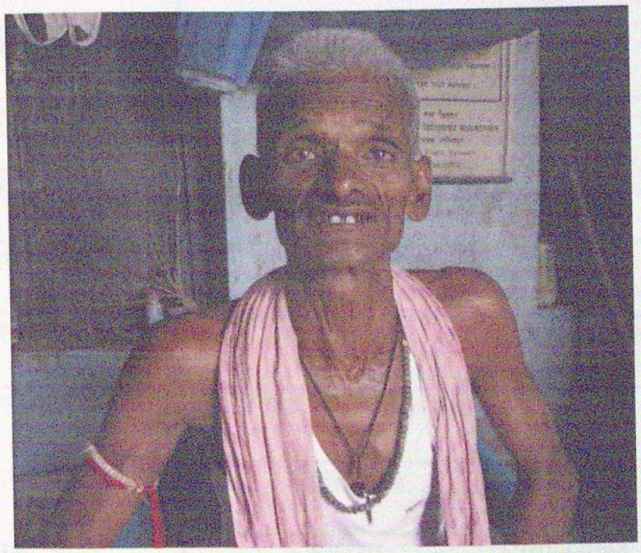

मैनेजर – बद्री पासवान, ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी,

पार्टी के सदस्य

नाम	काम	पता
पन्नेलाल राय	महिला पात्र, नृत्यांगना	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
संजय पासवान	महिला पात्र, नृत्यांगना	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
ब्रहमदेव पासवान	महिला पात्र, नृत्यांगना	ग्राम+पोस्ट – मटिआर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
दिनेश दास	महिला पात्र, नृत्यांगना	ग्राम+पोस्ट – मटिआर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
राजु पासवान	महिला पात्र, नृत्यांगना	ग्राम+पोस्ट – मुसहरनिया, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

जय किशोर राम	महिला पात्र, नृत्यांगना	ग्राम+पोस्ट – मटिआर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रामप्रताप पासवान	कैसियो वादक	ग्राम+पोस्ट – नरकटिआ, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रामदयाल पासवान	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – नरकटिआ, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रामाश्रय पासवान	अभिनेता (मंत्री)	ग्राम+पोस्ट – नरकटिआ, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
विष्णु दयाल पासवान	अभिनेता (इंदल)	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रामाश्रय पासवान	नगाड़ा वादक	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
महेश राम	जोकर हास्य कलाकार	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
सुरेन्द्र माझी	क्लॉरनेट वादक	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
परमहंस माझी	अभिनेता (इंद्रजीत)	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रामदेव माझी	कलॉरनेट वादक	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
प्रगास दास	नाल वादक	ग्राम+पोस्ट – रामनगरा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
दिनेश पासवान	अभिनेता 'मुख्य कलाकार'	ग्राम+पोस्ट – नरकटिआ, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
पंचलाल पासवान	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
तुलसी माझी	मोटिया	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
राकेश माझी	मोटिया	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

नच दल द्वारा प्रस्तुत्य कथा

- सुरमा सलहेस
- आल्हा उदल
- कुसमा हरण (most demanded)
- इन्द्रजीत फांसी (most demanded)
- फुला निकासी
- सोना हरन

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - श्याम किशोर राय

2.Father's name - स्व० फकीरा राय

3.Address - ग्राम + पो० दलकइवा।

फोन नं० - 9572531675

4.Specialization in art - मालिक, कैसियो वादक

5. since when 1975 - (61 वर्ष)

6. sources of livelihood नाच। खेती

7. special information if/any

Dhekhar.
Signature of project holder

signature of artist
श्याम किशोर राय

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - पनेलाल राय

2.Father's name - स्व. रामवृक्ष राय

3.Address - दलकावा पो. दलकावा
थाना सोनवरसा जिला सीतामढ़ी
843330

4.Specialization in art - डान्सर

5. since when 2000 उम्र 45

6. sources of livelihood नाच मजदूरी

7. special information if/any

Brekhan.
Signature of project holder

पेनालाल राय
signature of artist

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - संजय पासवान

2.Father's name - राम कैलाश पासवान

3.Address - दलकावा पो॰ दलकावा
थाना - सोनबरसा जिला सीतामढ़ी
843330 / फोन - 09572659924

4.Specialization in art - डान्स

5. since when २०००

6. sources of livelihood नाच मजदूरी उम्र 30

7. special information if/any

Signature of project holder [illegible]

संजय पासवान
signature of artist

Nach artists of sitamarhi district

1.Name - रामाश्रय पासवान

2.Father's name - ~~[illegible]~~ दसई पासवान

3.Address - ग्राम पो० दमकुआ

थाना सोनबरसा जिला सीतामढ़ी (बिहार)

पिन 843330

4.Specialization in art - मास्टर [illegible] बजाने वाला

5. since when 1980 उम्र 56)

6. sources of livelihood केवल नाँच मजदूरी

7. special information if/any

Signature of project holder

signature of artist

रामआश्रय पासवान

Nach artists of sitamarhi district

1.Name - महेश राम

2.Father's name - स्व० रामविलासराम

3.Address - ग्राम पो० दलकावा

थाना सोनबरसा जिला सीतामढ़ी (बिहार)

पिन 843330

4.Specialization in art - नाच जोकर कमेडी

5. since when 1980 उम्र 45

6. sources of livelihood १ केवल नाच मजदूरी

7. special information if/any

Dhershar.

Signature of project holder

signature of artist

महेशराम

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - रामप्रताप पासवान

2.Father's name - स्व० निगुनि पासवान

3.Address - ~~दलकावा~~ नरकटिया पो० दलकावा

थाना सोनबरसा जिला सीतामढ़ी बिहार

843330 फोन -

4.Specialization in art - कैसीयो मास्टर

5. since when 19 45 - उम्र 60

6. sources of livelihood नाच , मजदूरी

7. special information if/any

Bhekhar.

Signature of project holder

रामप्रताप पासवान

signature of artist

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - राम दयाल पासवान

2.Father's name पिता स्व० जयदेव पासवान

3.Address - ग्राम नरकटिया थाना सोनबरसा
जिला सीतामढ़ी (बिहार)
पिन 843330

4.Specialization in art - खलनायक

5. since when 1980 — उम्र 52

6. sources of livelihood नाच - मजदूरी

7. special information if/any

Bhaskar
Signature of project holder

राम दयाल पासवान
signature of artist

Nach artists of sitamarhi district

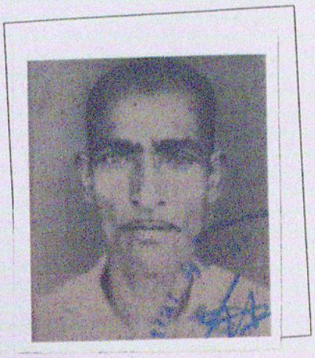

1.Name - विष्णु दयाल पासवान

2.Father's name - स्व० बिसुनदेव पासमान

3.Address - ग्राम पो० हरसहावा

थाना सोनबरसा जिला सीतामढ़ी (बिहार)

पिन 843330

1980 उम्र (50

4.Specialization in art - लौंडा नाच मजदूरी

5. since when

6. sources of livelihood

7. special information if/any

Shekhar

Signature of project holder

विशुन दयाल पासवान

signature of artist

जय हनुमान नाच कला परिषद (द्वितीय)

ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

मलिक – श्याम किशोर राय, ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार, फोन – 9572531675

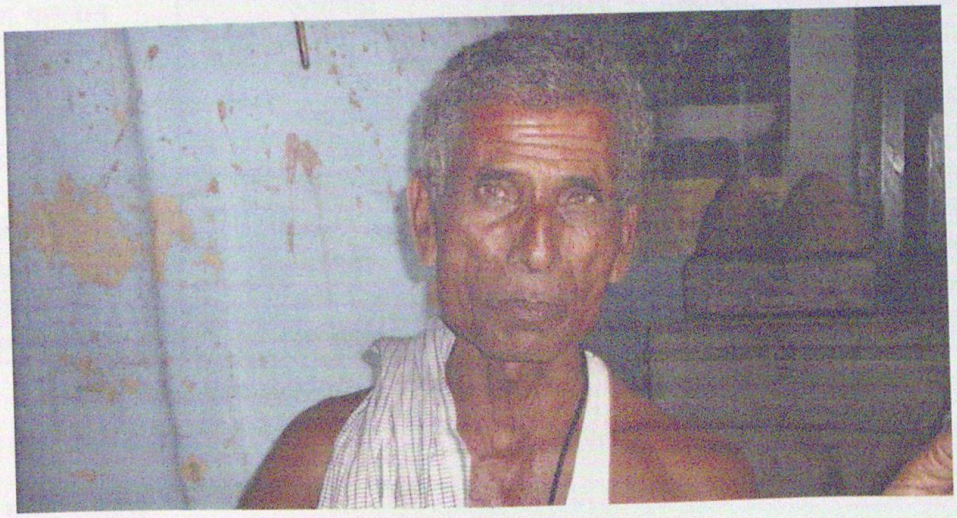

श्याम किशोर राय,

मैनेजर – राजदेव सहनी, ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार, फोन – 8292311161

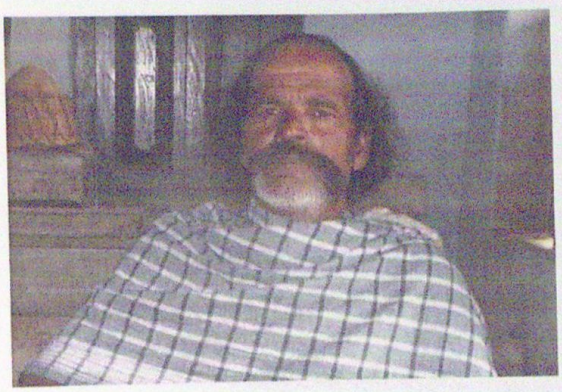

पार्टी के सदस्य

नाम	काम	पता
सोनेलाल यादव	अभिनेता, मुख्य कलाकार	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
लालबाबू यादव	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – रामनगरा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रामकिशन साह	अभिनेता, मुख्य कलाकार	गोईआरी, नेपाल
बद्री राम	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – इन्दरवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

बिनाही राम	क्लॉरनेट वादक	ग्राम+पोस्ट – बंजरी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रामप्रीत पासवान	हास्य कलाकार 'जोकर'	ग्राम+पोस्ट – नरगा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
मुनेस्वर राय	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
महेश पासवान	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रविन्द्र राय	अभिनेता 'मुख्य कलाकार'	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
किशोरी पंडित	नाल वादक	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
फेकु सहनी	नगाड़ा वादक	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
संजय राय	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
बिल्टू सहनी	मोटिया	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
बिल्टू राय	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
पहाड़ी माझी	मोटिया	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
लक्ष्मण राय	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रामएकवाल दास	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – दलकहवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

नच दल द्वारा प्रस्तुत्य कथा

- सुरमा सलहेस
- आल्हा उदल
- कुसमा हरण
- इन्द्रजीत फांसी
- फुला निकासी
- सेना हरन

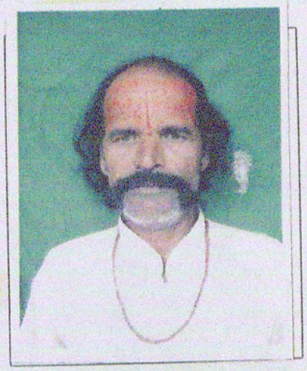

Nach artists of sitamarhi district

1.Name - राजदेव सहनी

2.Father's name - स्व० रामलाल सहनी

3.Address - ग्राम+पो०-दलकटवा

थाना-सोनबरसा, जिला-सीतामढ़ी (बिहार)

पिन - 843330

9

फो० 829231161

4.Specialization in art - मूरत संचालक, अभिनेता

5. since when 1980 (उम्र - 55)

6. sources of livelihood 'केवल नाच' मजदूरी

7. special information if/any

Signature of project holder

signature of artist

राजदेव सहनी

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - नागेन्द्र राम

2.Father's name - श्री. गनेश राम

3.Address - परसा पो० कन्हौली

थाना - कन्हौली जिला - सीतामढ़ी बिहार

पिन - 843317 फोन 9523468663

4.Specialization in art - डान्सर

5. since when 1982 - उम्र 45

6. sources of livelihood नाच मजदूरी

7. special information if/any

[illegible]
Signature of project holder

नागेन्द्र राम
signature of artist

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - उमेश पण्डित

2.Father's name - पलचारी पण्डित

3.Address - कन्दौली पो० कन्दौली

थाना - कन्दौली जिला सीतामढ़ी

फोन - 9102802851

4.Specialization in art - जाल बादक

5. since when 1995 उम्र 35

6. sources of livelihood नाच मजदूरी

7. special information if/any

Signature of project holder

उमेश पण्डित

signature of artist

विदेसिया नाच पार्टी

ग्राम+पोस्ट – जोगिवना बाज़ार, जिला – सीतामढ़ी बिहार

इस पार्टी की स्थापना सन् 1984 में वहां के त्त्कालिक सरपंच श्री राजेन्द्र साह ने की थी। सन् 2000 के बाद इस दल का संचालन फेकन पासवान कर रहे है। फेकन जी अप्रील,मई और जून के महिने में गोपालगंज जिला में अपना डेरा जमा लेते है और इस दौरान उन इलाकों सिरिपुर कांटा, होशेपुर, कनचुरिया आदि इलाकों में अपनी प्रस्तुति देते हैं यह दल मुजफ्फर जिले में खासा लोकप्रिय है। और जया विषहर तथा सोरठी वृजभान की प्रस्तुति के लिए खासा मशहूर है।

मलिक और मैनेजर – फेकन पासवान, ग्राम+पोस्ट – जोगिवना बाज़ार, जिला – सीतामढ़ी बिहार,

फोन – 8969321120

फेकन पासवान बाएं से दूसरा, महंत पासवान बाएं से तीसरा और डॉ0 चन्द्रशेखर

दल के सदस्य

नाम	काम	पता
महंत पासवान	कैसियो वादक	ग्राम+पोस्ट – हनुमान नगर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
चन्देसर पासवान	नगाड़ा	ग्राम+पोस्ट – दिग्घी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
दोरिक पासवान	ड्रम सेट वादक	ग्राम+पोस्ट – दिग्घी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
तेजनारायण पासवान	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – दिग्घी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
अशोक मल्लिक	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – मझौलिया, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
मेहिलाल पासवान	महिला अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – चिलड़ा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
महिन्द मल्लि	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – पुरनहिया, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
इस्लाम नट	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – पुरनहिया, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
शंकर पासवान	हास्य अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – बसहिया, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

नच दल द्वारा प्रस्तुत्य कथा

- आल्हा उदल
- रोरठी वृजभान (most demanded)
- सुरमा सलहेस
- कारिक महाराज
- घरबी दयाल
- जया विषहर (most demanded)
- हंसराज वंशराज
- राजा नल सिंह
- रानी सारंगा

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - फेकन पासवान

2.Father's name - स्व० बद्री पासवान

3.Address - ग्राम - जोगिवना बाजार पो० - जोगिवना बाजार

थाना - बथनाहा जिला - सीतामढ़ी

पिन - 843330 फोन - 9969321120

4.Specialization in art - मालिक

5. since when 1980 उम्र - 53 वर्ष

6. sources of livelihood ① नाच ② मजदूरी

7. special information if/any

Signature of project holder

फेकन पासवान

signature of artist

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - महेन्द्र पासवान

2.Father's name - सुखन पासवान

3.Address - ग्राम + पो० – हनुमान नगर

थाना - सोनबरसा , जिला - सीतामढ़ी

फोन - 8084925955

4.Specialization in art - कैसियो वादक, अभिनेता

5. since when 1982

उम्र – 50

6. sources of livelihood ① नाच ② खेती-बाड़ी ③ मजदूरी

7. special information if/any

महेन्द्र पासवान

Shekhar

Signature of project holder

signature of artist

रामदयाल नाच पार्टी

ग्राम+पोस्ट – फुलपरासी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

फिलहाल ये दल बिखरा हुआ है। इस दल को एक सशक्त संचालक की ज़रुरत है।

मालिक – रामदयाल साह, ग्राम+पोस्ट – फुलपरासी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार, फोन – 9199981702

रामदयाल साह और डॉ0 चन्द्रशेखर

दल के सदस्य

नाम	काम	पता
चन्देसर राम	कैसियो वादक	ग्राम+पोस्ट – भलुआहा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
जेतराम पासवान	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – भलुआहा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
दसई राम	नगाड़ा	ग्राम+पोस्ट – फुलपरासी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
अरुण पटेल	डम सेट वादक	ग्राम+पोस्ट – रामनगरा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
शिवधारी साह	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – बसहिया, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
शंकर पासवान	हास्य अभिनेता 'जोकर'	ग्राम+पोस्ट – बसहिया, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
सुबोध पासवान	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – मटिआर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
जयकिशोर राम	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – मैहवी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
कैलाश मंडल	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – लतीपुर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रघुनाथ मंडल	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – लतीपुर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रघुवीर राम	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – फतेहपुर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
दिनेश मंडल	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – बदुरी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
पुरन दास	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – फुलपरासी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
टेकनारायण साह	उद्घोषक	ग्राम+पोस्ट – मघुबनी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
चन्देसर पासवान	अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – मुसहरनिया, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

नच दल द्वारा प्रस्तुत्य कथा

- कारिक महाराज
- रानी सारंगा (most demanded)
- रुनवा झुनवा
- राजा नल सिंह

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - रामदयाल साह

2.Father's name - रवेन्द्र साह

3.Address - ग्राम - फुलपरासी, पो० - सिंगरहिया
थाना - सैहारा, जिला - सीतामढ़ी
पिन - 843317, फोन - 9199981702

4.Specialization in art - मालिक

5. since when 1985 उम्र - 70

6. sources of livelihood (1) नाच (2) खेती-बारी

7. special information if/any

Signature of project holder Thakur.

signature of artist रामदयाल

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - चन्देश्वर राम

2.Father's name - डगा राम

3.Address - ग्राम - भलुआहा, पो० - ~~भलुआहा~~ कन्हौली
जिला - सीतामढ़ी, बिहार
फोन - 9661602435

4.Specialization in art - केसियो (Casio player)

5. since when 1985 उम्र - 55

6. sources of livelihood नाच

7. special information if/any

Phardar
Signature of project holder

चन्देश्वर राम
signature of artist

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - ओतनरायण पासवान

2.Father's name - जुरी पासवान

3.Address - ग्राम - अलुआहा, पो० - कन्हौली
थाना - कन्हौली, जिला - सीतामढ़ी
पिन - 843317 फोन - 9199740223

4.Specialization in art - महिला पात्र

5. since when 1995 उम्र - 35

6. sources of livelihood ① नाच ②

7. special information if/any

Signature of project holder — P.Shekhar

signature of artist — ओतनरायण पासवान

शिवम डांस एण्ड ड्रामा पार्टी

ग्राम+पोस्ट – जानकीनगर बाज़ार, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

शिवम डांस एण्ड ड्रामा पार्टी एक एसी पार्टी है जो गीत, ग़जल, फिल्मी ट्रेलर जिसमें चंकी पांडे का ''खिलाफ'', अक्षय कुमार का ''सौगन्ध'', मिथुन चकवर्ती का ''भ्रष्टाचार'', सन्नी देवल का ''हिन्दुस्तान की कसम'' आदि फिल्मों का टेलर को प्रस्तुत करते है। और फिर कोई नाटक ''मां का आंचल'' या ''इंसानी फर्ज''

मालिक – जुगल किशोर महतो
मैनेजर – मिथलेश सहनी
दल के सदस्य

नाम	काम	पता
रामएकवाल पासवान	हारमोनियम वादक	ग्राम–बिसनपुर आधार, पोस्ट–अररिया, जिला–सीतामढ़ी, बिहार
बिकाउ पासवान	नाल वादक	ग्राम+पोस्ट – डाम्ही, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रामबाबू पासवान	ड्रमसेट वादक	ग्राम+पोस्ट – ओरलहिआ, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
मिथलेश सहनी	मुख्य अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – जानकीनगर बाज़ार, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
इंदल पासवान	अभिनेता 'खलनायक'	ग्राम+पोस्ट – मुसहरवा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
घरमदेव शर्मा	अभिनेता 'खलनायक'	ग्राम+पोस्ट – किशनपुर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
बिगु पासवान	हास्य कलाकार	ग्राम+पोस्ट – रामनगरा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
सागर मंडल	उद्घोषक	ग्राम+पोस्ट – भेरहिआ, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
कृष्ण कुमार माझी	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – हरिबेला, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
संजय पासवान	महिला पात्र	ग्राम+पोस्ट – नरगा, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
शिवजी कपूर	अभिनेता 'खलनायक'	ग्राम+पोस्ट – बखरी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
रविन्द्र पासवान	अभिनेता 'नायक'	ग्राम+पोस्ट – लोहखर, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
राजकिशोर पासवान	अभिनेता 'नायक'	ग्राम+पोस्ट – खैरा टोल, जिला –सीतामढ़ी, बिहार
मिथिलेश माझी	मोटिया और अभिनेता	ग्राम+पोस्ट – छोटी सिमाहिनी, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - जुगल किशोर महतो

2.Father's name - स्व.ममसी महतो

3.Address - ग्राम जानकी नगर

थाना सोनबरसा जिला सीतामढ़ी बिहार

4.Specialization in art - मालिक बकार फोन - 9801219246

5. since when 2009 पिन कोड 843317

6. sources of livelihood उम्र 60

नाच - मजदूरी

7. special information if/any

Signature of project holder — PShekhar

signature of artist — जुगल किशोर महतो

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - रामएकबाल पासवान

2.Father's name - स्व० बहादुर पासवान

3.Address - ग्राम - बिसनपुर अख्धारा, पोस्ट - अररिया
जिला - सीतामढ़ी बिहार
पिन - 843330 फोन - 95073543213

4.Specialization in art - कैसियो (Casio) हारमोनियम वादक

5. since when 1980 उम्र - 52

6. sources of livelihood ① नाच ② मजदूरी

7. special information if/any

Signature of project holder P.Shekhar

signature of artist रामएकबाल पासवान

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - रविन्द्र पासवान

2.Father's name - ललीत पासवान

3.Address - ग्राम - लोहखर , पो० - लोहखर
थाना - सोनबरसा , जिला - सीतामढ़ी (बिहार)
फोन - 9801794855

4.Specialization in art - अभिनेता (पुरुष)

5. since when 1995 उम्र पिन कोड 843317

6. sources of livelihood (1) नाच (2) खेती - बाड़ी

7. special information if/any

Phulhar

Signature of project holder

रवीन्द्र पासवान

signature of artist

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - सागर मंडल

2.Father's name - श्री राम बहादुर मंडल

3.Address - ग्राम - भैरहिया (नेपाल) पो० - मलंगवा सर्लाही
थाना मलंगवा जिला सर्लाही
फोन - 7352256522

4.Specialization in art - उद्घोषक एलाउन्सर

5. since when 2005, उम्र - 22

6. sources of livelihood (1) नाच - मजदूरी

7. special information if/any

Phekhar
Signature of project holder

सागर मंडल
signature of artist

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - रामबाबू पासवान

2.Father's name - महेन्द्र पासवान

3.Address - ग्राम - औरलहिया , पो० - कन्हौली
थाना - कन्हौली , जिला - सीतामढ़ी (बिहार)
पिन - 843330 , फोन - 7352410034

4.Specialization in art - ड्रम वादक (Drum player)

5. since when 2000 उम्र - 25

6. sources of livelihood नाच , टेलर मास्टर

7. special information if/any

P.Shekhar.
Signature of project holder

रामबाबू पासवान
signature of artist

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - बिगु पासवान

2.Father's name - स्व० अच्छेलाल पासवान

3.Address - ग्राम - रामनगरा , पो० - रामनगरा

थाना - बचनाहा , जिला - सीतामढ़ी (बिहार)

पिन - 843330 फोन - 8434175410

4.Specialization in art - हास्य कलाकार

5. since when 1980 उम्र — 55

6. sources of livelihood ① नाच ② मजदूरी

7. special information if/any

[illegible]
Signature of project holder

बिगु पासवान
signature of artist

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - मिथिलेश सहनी

2.Father's name - बच्चु सहनी

3.Address - ग्राम - जानकी नगर बाजार पो० - सिमाटिनी

थाना - सोनबरसा, जिला - सीतामढ़ी (बिहार

पिन - 843317 फोन - 9661267199

4.Specialization in art - मुख्य अभिनेता

5. since when 1985, उम्र - 42 ~~पिन~~

6. sources of livelihood (1) नाच (2) खेती-बाड़ी

7. special information if/any

मिथिलेश सहनी दल के मुख्य संचालक हैं।

Bhaskar.

Signature of project holder

मिथलेश सहनी

signature of artist

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - राजा मँसूर

2.Father's name - इस्लाम मँसूर

3.Address - ग्राम - जयनगर, पोस्ट - बनरझुला
थाना - सोनबरसा, जिला - सीतामढ़ी (बिहार)
पिन - 843330, फोन - 7654574519

4.Specialization in art - महिला पात्र, नृत्यांगना

5. since when 2014, उम्र - 15 वर्ष

6. sources of livelihood नाच,

7. special information if/any

राजा मँसूर नौवीं कक्षा का विद्यार्थी है

P Shekhar
Signature of project holder

राजा मंसूर
signature of artist

दी ग्रेट एण्ड संगीत पार्टी विदेसिया

ग्राम+पोस्ट – मौदह, जिला –सीतामढ़ी, बिहार

इस नाम से यहाँ तीन पार्टियां चलती है। यह पार्टी अपने आप को एडवांस पार्टी घोषित करते हुए ये अजीबो गरीब नाम रख लिया है। इस पार्टी की खसियत है कि इसमें बराबर तोड़ जोड़ होता रहता है।

मलिक – जयनरायण महतो

मैनेजर – रामकिशोर पासवान उर्फ चंपा डांसर

नच दल द्वारा प्रस्तुत्य कथा

- वृजभान (most demanded)
- रानी सारंगा (most demanded)
- कौआ हकनी (most demanded)
- हंसराज वंसराज

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - प्रेमचन्द पासवान

2.Father's name - स्व० भोला पासवान

3.Address - ग्राम + पो० - मौदह

थाना - सैदारा, जिला - सीतामढ़ी बिहार

फो० न० - 8578887784

4.Specialization in art - अभिनेता

5. since when 1985

उम्र - 45 वर्ष

6. sources of livelihood ① नाच ② खेती-बाड़ी

7. special information if/any

Phaskar.

Signature of project holder

प्रेमचन्द पासवान

signature of artist

Nach artists of Sitamarhi district

1.Name - संजय पासवान

2.Father's name - सोगारथ पासवान

3.Address - ग्राम + पो० - भौरहा,
थाना - सैटारा, जिला - सीतामढ़ी (बिहार)
पिन फोन - ८५७८८८७७८५

4.Specialization in art - जोकर (हास्य कलाकार)

5. since when १९९८ उम्र - ३२ वर्ष

6. sources of livelihood ① नाच ② खेती-बाड़ी

7. special information if/any

DShekhar.
Signature of project holder

संजय पासवान
signature of artist

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य–

आज के समय में नाच दल को चलने में सबसे बड़ी समस्या आर्थिक है। प्रभुदयाल जी का कहना है कि आठ से दस हज़ार रुपए एक साटा का मिलता है जिसमें दो रात प्रस्तुति देना पड़ता है। फिर तीसरे रात की प्रस्तुति के लिए रकम दुगूनी हो जाती है। रकम का दस फिसदी मालिक को जाता है जिसमें उसे साजो सामान की देख रेख करना होता है बाकी रकम कलाकारों में बराबर बांट दिया जाता है। लेकिन सबसे बड़ी समस्या ये है कि कलाकार अग्रिम राशि मांगने लगे है। कलाकार पच्चास हज़ार तक की अर्गिम राशि मांगने लगे है। इसका कारण ये है कि यदि मालिक चाहता है कि कोई कलाकार एक पाख तक उसके दल के साथ रहे तो कलाकार अग्रिम राशि की मांग करते है। ऐसे में नाच मालिक के लिए खासा परेशानी है। अग्रिम राशि ना दो तो कलाकार आ भी सकते है और नहीं भी। साटा की रकम में इजाफा नहीं हो रहा है।

श्यामकिशोर राय कहते है कि अब वो बात नहीं रही फिर भी चुंकि बाप दादा का नाम जुड़ा है इसलिए पार्टी चला रहा हूं लेकिन मैं बिलकुल हस्तक्षेप नहीं करता। मैं मालिकाना भी नहीं लेता। सबकुछ दल पर छोड़ रखा है चाहे तो वो चलाए नही तो नहीं। उन्होंने ये भी बताया कि पहले नवयुवक खुशी से नाच से जुड़ते थे लेकिन अब नहीं। कारण पूछने पर बताया कि लोगों के लिए अब नाच न तो आर्थिक रुप से ना ही प्रतिष्ठा के रुप में लाभदायक रह गया है।

आलकल हर पार्टी दो तरह की प्रस्तुति करने लगा है। एक तरह की प्रस्तुति को वो ड्रामा कहते है। और दूसरे तरह की प्रस्तुति को बिदेसिया।

- ड्रामा प्रस्तुति में वो रिकॉर्डिंग डांस, फिल्मी ट्रेलर और सामाजिक नाटक के नाम पर उस इलाके में कुछ लिखित नाटक उपलब्ध है जैसे – ''फेक दो कलम उठा लो बंदूक'', ''हकदार उर्फ खून का रिश्ता'' ''बदला'' ''गांव का दलाल'', ''मां का आंचल'', ''दे दो रोटी गरीब की'', ''आदर्श नारी'', ''इंसानी फर्ज़''। शिवम डांस एण्ड ड्रामा पार्टी एक एसी ही पार्टी है जो गीत, ग़जल, फिल्मी ट्रेलर जिसमें चंकी पांडे का ''खिलाफ'', ''अक्षय कुमार का सौगन्ध'', मिथुन चकवर्ती का ''भ्रष्टाचार'', सन्नी देवल का ''हिन्दुस्तान की कसम'' आदि फिल्मों के ट्रेलर को प्रस्तुत करते है। और फिर कोई नाटक ''मां का आंचल'' या ''इंसानी फर्ज''
- बिदेसिया प्रस्तुति – बिदेसिया प्रसतुति में वे लोकगाथाएं प्रस्तुत करते है।

नाचकर्मियों से बातचीत से पता लगा कि दर्शकों के दो वर्ग है एक बुजुर्गों का और एक नवयुवकों का। प्रस्तुति के चुनाव में नाच पार्टी की कोई भूमिका नहीं होती। स्थान और अवसर के अनुसार दल को प्रस्तुति देनी पड़ती है। नवयुवकों की मांग रिकॉरडिंग डांस, फिल्मी ट्रेलर और ड्रामा की होती है जबकि बुजुर्गों की मांग लोकगाथा की। इसलिए प्रस्तुति छिन्न–भिन्न हो जाती है। आधी रात तक बुजुर्ग हावी होते है और आधी रात के बाद नौजवान। लेकिन कुछ अवसरों पर सिर्फ लोकगाथा ही प्रस्तुत किए जाते है खासकर नागपंचमी के अवसर पर जया विषहर की प्रस्तुति अनिवार्य है इसमें कोई हस्तकक्षेप नहीं करता। इसी तरह दुर्गा पूजा के अवसर पर चुंकि नौंवी तक मांस मदिरा का सेवन नहीं करना होता है तो रानी सारंगा, सदा वृजभान, कौआ हकनी, कुसमा हरण की प्रस्तुति होती है लेकिन जैसे ही नैंवी की बली प्रदान हुआ नवयुवक हावी हो जाते है फिर रिकार्डिंग डांस और फिल्मी ट्रेलर का दौर चलता है।

पिछले पचचीस सालों में जो कथाएं सबसे अधिक प्रस्तुत की गई हे वो है– आल्हा उदल, जया विषहर, कौआ हकनी, सोरठी वृजभान, रानी सारंगा, कुसमा हरण।

धन्यवाद

डॉ0 चनद्रशेखर प्रसाद

Project detail

बिहार राज्य के सीतामाढ़ी जिला में मैथिली लोकनाट्य 'नाच' तथा नाचकर्मियों की दशा और दिशा

उदेश्य (Objectives)

1. सीतामाढ़ी जिला के नाचकर्मियों का पता ठिकाना
   (Identification of Nach practicener in Sitamarhi district)
2. पिछले पच्चीस सालों में सबसे अधिक लाकगाथाएं एवं उसका सामाजिक सरोकार
   (The most popular folklores has been performed for last 25 years and its social cocern)
3. युवाओं की सांस्कृतिक चेतना और वर्तमान प्रस्तुत्य नाच की प्रासंगिकता
   (Cultural consciousness of the youth and the relevance of current Nach practice)
4. नाच प्रस्तुति की गुणात्मक विकास की संभावना
   (Possibility of the quality enrichment of nach practice)

परिचय–

सीतामढ़ी जिला –

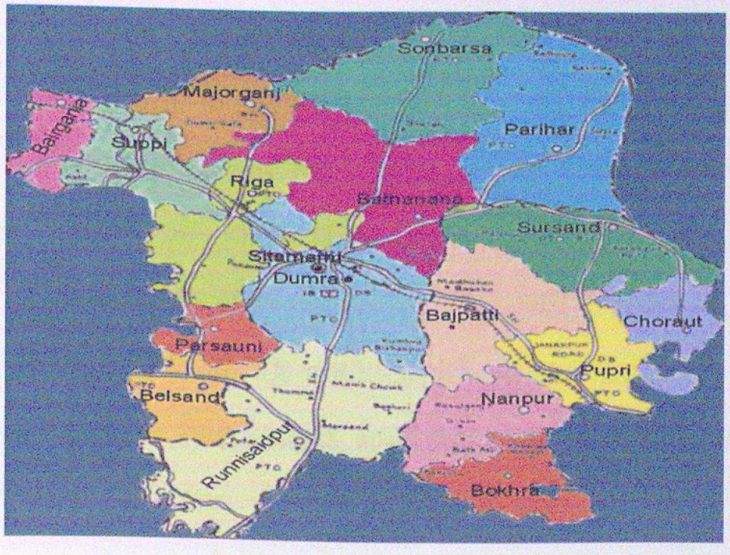

सीतामढ़ी हिन्दुस्तान के सबसे अधिक पिछड़ा हुआ इलाका में से है। इस जिला को 'backward region grant fund programme' के लिए चुना गया है। सीतामढ़ी नक्सल प्रभावित क्षेत्र भी है। करीब 3,419,622 जनसंख्या वाला यह जिला मिथिला, वज्जिका और भोजपुर का संगम स्थल है। इसका उत्तरी–पूर्वी भाग मैथिली भाषा और संस्कृति प्रधान है। दक्षिणी भाग वज्जिका क्षेत्र कहा जाता है। तथा उत्तरी–पश्चिमी भाग भोजपूरी भाषा और संस्कृति के करीब है। 1994 में सीतामढ़ी से कटकर शिवहर जिला बन जाने के बाद सीतामढ़ी का कुछ ही भाग भोजपूरी भाषी रह गया है। सीतामढ़ी का प्रशासनिक भाषा मैथिली और हिन्दी है। और मुख्य रुप से इसे मिथिलांचल क्षेत्र कहा जाता है। रामायण के अनुसार यह मिथिला नरेश जनक का क्षेत्र है और जनक पुत्री सीता का जन्मस्थली।

नाच – नाच मिथिलांचल का सबसे प्राचीन लोकनाट्य है। मैथिली समाज में इस नाट्य के प्रचलित होने का संकेत हमें 13वीं शताब्दी में प्रसिद्ध विद्वान ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा विरचित ग्रंथ 'वर्णरत्नाकर' से मिलता है। ज्योतिरीश्वर ने इस ग्रंथ में तत्कालीन समाज में प्रचलित कला रूपों का भी वर्णन किया है। जिसके अंतर्गत 'लोरिक नाच' का ज़िक्र हुआ है। नाच शब्द को लेकर विद्वानों में मतभेद रहा है। कुछ लोग इसे नृत्य मानते रहे और कुछ लोग नाटक। मैथिली के प्रसिद्ध नाटककार और निर्देशक श्री महेन्द्र मलंगिया के अनुसार– ''मिथिला के जन सामान्य में नाटक को नाच के नाम से ही जाना जाता है। आज भी यही है जैसे – लोरिक नाच, सलहेस नाच, बुढ़िया गोढ़िन नाच आदि। ये सभी विशुद्ध रूप से लोकनाट्य है पर नाच के नाम से ही जाने जाते है। लोरिक, सलहेस, बुढ़िया–गोढ़िन आदि नाच के कथानक है। '' (संदर्भ– 'मिथिला में लोकलाट्यों की परंपरा' आलेख – महेन्द्र मलंगिया, पृष्ठ–139, रंग–प्रसंग, अंक 16, राष्टीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली)

डॉ0 ओमप्रकाश भारती ने इसे नटुआ नाच से संबोधित किया है। (संदर्भ– बिहार के पारंपरिक नाट्य, डॉ0 ओमप्रकाश भारती, पृष्ठ–161, प्रकाशक– उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद 2007)

इस संबंध में डॉ0 प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' मिथिलांचल के विभिन्न लोकनाट्य का गंभीर विश्लेषण करते हुए इसे ''गाथा नाच'' कहा है। चूँकि नाच में लोकगाथा प्रदर्शित की जाती है। इसलिए उन्होंने इसे ''गाथा नाच'' कहा है। (संदर्भ – हमारे लोकधर्मी नाट्य, संपादक– अनिल पतंग, पृष्ठ– 19,20, प्रकाशक– प्रकाशन विभाग, नाट्य विद्यालय, बेगुसराय 2000–2001)

नाच में लोकगाथा प्रस्तुत किए जाते है। ये लोकगाथाएँ मौखिक परंपरा में है। इन लोकगाथाओं में मिथिला के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक चिन्ह स्पष्ट देखे जा सकते है। इसमें विभिन्न कालों का इतिहास, समाज दर्शन एवं लोकजीवन का जो सुन्दर चित्रण हुआ है वह विलक्षण है। सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि ये मैथिल समाज के अति पिछड़े वर्गो की सांस्कृतिक धरोहर है और समूचे मैथिल समाज की आस्था।

नाच मिथलांचल का उत्कृष्ट लोकनाट्य है। मैथिल समाज में 'नाच' का प्रदर्शन एक परंपरा है। इसकी पुष्टि इस बात से की जा सकती है कि धार्मिक उत्सवों (दुर्गा पूजा, काली पूजा, इन्द्र पूजा), पर्व–त्योहारों (छठ, जूर शीतल आदि), तथा शादी–विवाह में नाच के प्रदर्शन की अनिवार्यता आज भी मैथिल समाज में बरकरार है।

प्रस्तुति विधान– नाच का आरंभ संगत से होता है। इसमें वाद्यवादकों द्वारा विभिन्न वाद्य जैसे ढ़ोलक, झाल, हारमोनियम, नगाड़ा, क्लॉरनेट को एक साथ बजाया जाता है। यह प्रस्तुति के लिए माहौल बनाने का काम भी करता है। उसके बाद सभी अभिनेता एक साथ मंच पर आते है और नृत्य करते हुए वंदना करते है, जिसे सुमिरन कहा जाता है। उसके बाद कोई वरिष्ट अभिनेता मंच पर आकर प्रस्तुत्य कथानक की घोषणा करता है। फिर कथा आरंभ हो जाता है। संवाद गीतात्मक शैली में प्रस्तुत किया जाता है। संवाद लंबे होते है इसलिए बीच–बीच में ठहराव के लिए या दूसरे संवाद बोलने से पहले चूँकि संवाद गीतात्मक होता है इसलिए सुर और ताल के साथ तालमेल बैठाने के लिए एक या दो संवाद गद्य में बोला जाता है। इसमें विदुषक जिसे आम बोलचाल में 'जोकर' कहा जाता है कि बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

हास्य रस का सारा दारोमदार उसी के कंधों पर होता है। वैसे तो वह मुख्य पात्र के साथ होता है लेकिन उसकी भूमिका कोई निश्चित नहीं होती है। वह सब जगह होता है। और यथास्थिति पर व्यंगात्मक प्रहार कर हास्य की उत्पत्ति करता है। इस क्रम में वह बीच–बीच में मूल कथा से हटकर कोई अन्य प्रसंग भी प्रस्तुत कर जाता है। इस तरह के प्रसंग तीखे व्यंग्यात्मक होते है और हास्य रस में सराबोर होते है। अक्सर वह इस बहाने काफी बौद्धिक बातें कह जाता है।

प्रदर्शन क्षेत्र – बिहार का उत्तरी–पूर्वी हिस्सा, जिसमें सीतामढ़ी, मधुबनी, पुर्णिया, कटिहार, सहरसा, बेगुसराय, समस्तीपुर, दरभंगा आदि ज़िले आते है, मिथिलांचल कहे जाते है। उपर्युक्त सभी जगहों पर नाच के नियमित प्रदर्शन के प्रमाण मिलते है।

मंच व्यवस्था – नाच का मंच बहुत ही अनौपचारिक होता है। किसी भी खुले मैदान, आम का बगीचा या गाँव के चौपाल पर दो–चार चौकी डालकर उसे बाँस–बल्ले से एक अस्थायी मंच बना लिया जाता है। मंच की लंबाई, चौड़ाई या ऊँचाई कोई निश्चित नही होती है। ज्यादातर मंच 12'X12' या 16'X12' का होता है। कहीं–कहीं कंक्रीट का बना बड़ा प्लेटफॉर्म हो तो उसमें ज़रुरत के मुताबिक जगह को, परदे से घेर लिया जाता है। प्रस्तुति संवाद–प्रधान होने के कारण इन्हें आधुनिक रंगमंच के लिए उपयोग किए जाने वाले औसतन मंच से छोटे मंच की आवश्यकता होती है। पीछे एक चित्रित पर्दा लगा दिया जाता है। मंच का अग्र भाग खुला होता है। मंच के अग्र भाग पर दो माइक चार–पाँच फीट के फासले पर होता है। अभिनेताओं का सारा कारोबार इन दो माइकों के दायरे में सिमटा होता है।

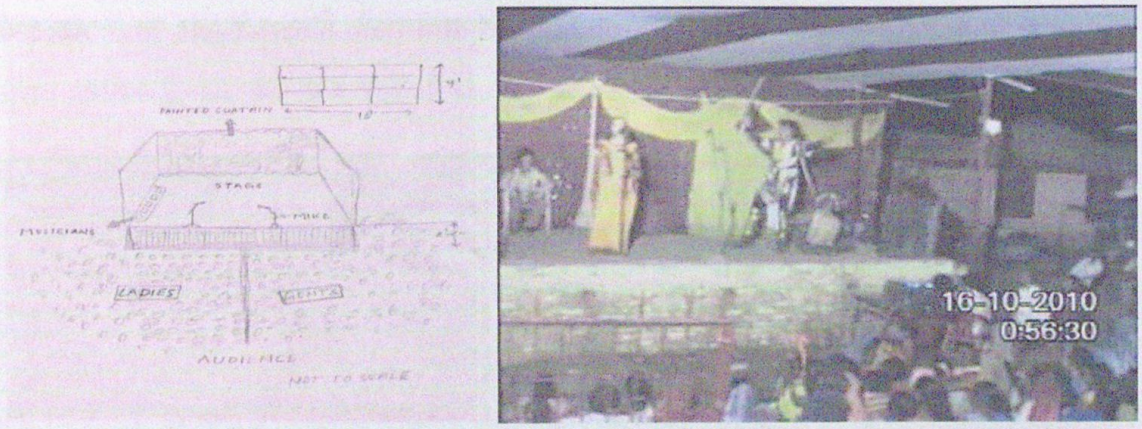

वर्तमान मंच व्यवस्था

सत्तर–अस्सी के दशक में प्रस्तुति के लिए किसी खुले मैदान या आम के बगीचे में एक सामियाने के नीचे ज़मीन पर ही चारों तरफ लोग बैठ जाते थे। बीच में एक गोलाकार जगह जिसका व्यास 12'–15' का होता था, छोड़ दिया जाता था। जिस पर नाच की प्रस्तुति होती थी। इसी में एक तरफ वाद्यमंडली बैठती थी और दर्शकों के बीच से एक गलियारा निकाल लिया जाता था, जिससे पात्रों का आना जाना होता था। प्रस्तुति स्थल के आस–पास उपलब्ध किसी झोपड़ी या किसी घर के किसी कोने को श्रृंगार कक्ष (Make-up Room) बना लिया जाता था। या फिर दरी या तिरपाल से एक छोटे से भाग को घेर लिया जाता था। ध्वनि व्यवस्था के लिए माइक का उपयोग किया जाता था। प्रकाश के लिए पहले पेट्रोमैक्स का उपयोग किया जाता था। वर्तमान में जेनरेटर की व्यवस्था कर बल्व और ट्यूब से रौशनी की पूर्ति की जाती है।

रूप सज्जा– नाच शुरू होने से करीब एक घंटा पहले सभी अभिनेता श्रृंगार कक्ष में इकट्ठा हो जाते है। पात्र के प्रवेशानुसार वो सभी अपना–अपना श्रृंगार करते है। पहले श्रृंगार के लिए मुर्दाशंख का उपयोग किया जाता था, उसके बाद जिंकऑक्साइड का उपयोग होने लगा। मुर्दाशंख घिसकर लगाया जाता था और जिंकऑक्साइड को घोलकर। लेकिन अब इसके लिए बेस ट्यूब का उपयोग किया जाता है। और साथ में फेस पाउडर का भी उपयोग किया जाता है।

स्त्री पात्र चेहरे पर चमकी (अबरख) लगाता है। भौंह बनाने के लिए कोयला या काजल का उपयोग किया जाता है।

(सोनबरसा चौक, सीतामढ़ी में 'रेश्मा चुहड़मल' नाच की प्रस्तुति के लिए स्त्री पात्र निभाने वाला एक पारंपरिक कलाकार चेहरे पर बेस ट्यूब लगाते हुए। तथा दुसरा काजल से भौं बनाते हुए)

विपटा अपने चेहरे पर पतलखड़ी (chalk) और कोयला लगा लेता है। ज्यादातर पुरूष अभिनेता बड़ी–बड़ी असली मूँछे रखते है। नहीं तो बनी बनायी मूँछों का उपयोग करते है। या फिर क्रेप या रंग से मूँछे बनाते है।

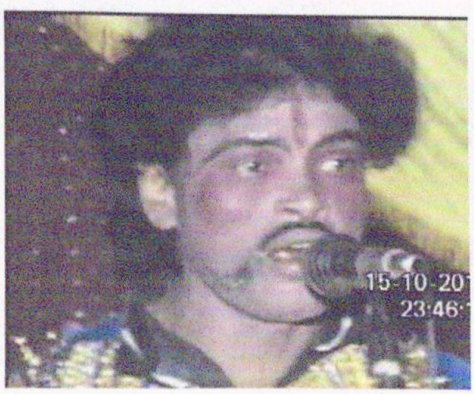

(सलहेस नाच का पात्र मोतीराम, पंद्रह अक्टूबर 2010 को सोनबरसा चौक सीतामाढ़ी में सलहेस नाच की प्रस्तुति करते हुए।)

वस्त्र सज्जा – नाच का वस्त्र विन्यास अनौपचारिक है। किसी भी पात्र का कोई तयशुदा वस्त्र नहीं है। पुरूष पात्र धोती, कुरता और बंडी या फिर पैंट, शर्ट, बंडी या फिर पायजामा, कुरता,

बंडी पहनते है। कुछ अच्छे दलों के अभिनेता पैंट, शर्ट, तथा लंबी जरसी पहनते है। पाँव में जुराव पहनते है, या नंगे पाँव रहते है।

(दायें से) जोकर, मुख्य पात्र तथा दो अन्य पात्र

स्त्री पात्र

कोई विशिष्ट पात्र जैसे देवी–देवता, साधु सन्यासी, या फकीर हो तो पात्रानुसार वस्त्र धारण करते है। स्त्री पात्र मुख्यतः साड़ी पहनती है। या फिर घाघरा, चोली और दुपट्टा का उपयोग करती है। विपटा विभिन्न रंगो का धारीदार वस्त्र धारण करता है। और साथ में गोलाकार टोपी पहनता है। वह अपना पुरा हुलिया एक 'जोकर' (joker) की तरह बनाता है।

वाद्य यंत्र – नाच में मुख्यतः ढ़ोलक, हारमोनियम, नगाड़ा, क्लॉरनेट, और मंजीरा होता है। वर्तमान में कुछ नाच दल ड्रमसेट तथा कीपैड का उपयोग करने लगे है।

बैंजो

हारमोनियम

क्लॉरनेट

नगाड़ा

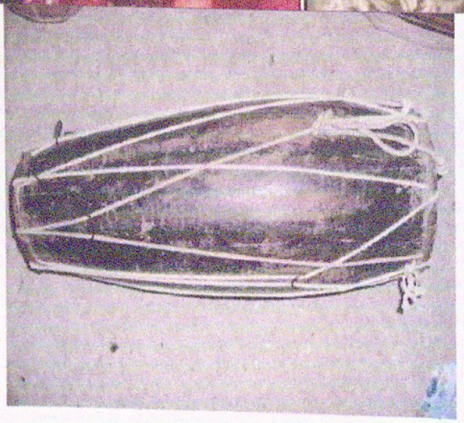

ढ़ोलक

अभिनेता तथा उसका प्रशिक्षण

अभिनेता– नाच के अभिनेता पुरूष होते है। स्त्री पात्रों की भूमिका भी पुरूष अभिनेताओं द्वारा ही निभाई जाती है। अठारह साल से लेकर पचास–पचपन साल तक के लोग इसमें शामिल होते है। इसमें ज्यादातर पिछड़ी जाति के लोग होते है। साथ ही मुस्लिम समुदाय के लोग भी होते है। इनकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति यह है कि नाच के अलावा ये किसानी करते है, मजदूरी करते हैं या रिक्सा चलाते हैं। क्योंकि अकेले नाच से इतनी आमदनी नहीं होती है कि सामान्य गृहस्थी भी चलाई जा सके। ज्यादातर अभिनेता निरक्षर होते है, लेकिन अज्ञानी नहीं। इन्हें लोकज्ञान की अच्छी समझ होती है।

प्रशिक्षण – चूँकि नाच के कथानक मौखिक परंपरा में है, इसलिए अभिनेताओं का प्रशिक्षण भी मौखिक विधि से होता है। दल का मुखिया जो हर तरह के पात्रों को अभिनित करने में निपुण होते है, अवकाश के समय में अभिनेताओं को प्रशिक्षित करने का काम करते है। अभिनय में वाचिक की प्रधानता होती है, और संवाद गेय रूप में होता है। अतः गुरू संवाद को गाते है, और प्रशिक्षु अभिनेता उसे दुहराते है। साथ में वाद्य वादक भी होते है। इस तरह से अभिनेता पात्रों को अभिनित करने में निपुण हो जाते है। धीरे–धीरे उनमें से एक–दो अभिनेता बहुत सारे पात्रों को अभिनित करने में सक्षम हो जाते है। और उसे गुरू का दर्जा मिल जाता है। कई दल ऐसे अभिनेता को प्रशिक्षक के रूप में आमंत्रित करते है। एक सप्ताह या दस दिन के लिए प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है। ऐसे प्रशिक्षक को दल की तरफ से समुचित पारिश्रमिक भी दिया जाता है।

समस्या (problems) – नाच की हज़ार साल की परंपरा तत्कालिन अभिव्यक्ति की दास्तान है। इसने समयानुसार हर एक सामाजिक गतिविधियों को अपने माध्यम से अभिव्यक्त किया है। वर्तमान में नाच विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है। विगत वर्षों में सामाजिकों के रहन सहन में भारी फेर बदल हुआ हुआ है। इसके साथ–साथ लोगों के देखने और समझने के नज़रिए में भी फर्क पड़ा है। इसका व्यापक और घातक असर स्थानीय लोककलाओं पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। नाचकर्मी दर्शकों के इस बदलते नज़रिय के साथ तालमेल बैठा पाने में सर्वथा असमर्थ है। सामाजिकों की चेतना बड़ी तेजी से परिवर्तित हो रही है। लेकिन नाच की गतिमयता में लगातार ठहराव की स्थिति में बनी हुई है। नाच जो विरोध और संघर्षों का

इतिहास है आज सर्वथा हासिय पर खड़ा है। तो दूसरी तरफ नाच को भारी आर्थिक समस्या से गुजरना पर रहा है। उनका नाटकीय साजो सामान जिर्न सिर्न अवस्था में है। नाचकर्मी जैसे तैसे प्रदर्शन कर पाते है। इससे लोगों का रुझान नाच के प्रति कम हुआ है। अतः नाच के नियमित प्रदर्शन में कमी आई है। साथ में प्रदर्शन का उचित मेहताना (fee) नहीं मिलता। ये सब एक दुसरे के पूरक है– प्रदर्शन कम होने और उचित मेहताना न मिलने से नाचकर्मी बेहतर नाटकीय साजो सामान का इंतजामात नहीं कर पाते है जससे प्रस्तुति उदास और निरस मालूम पड़ता है और नजीजा लोगों की रुचि नाच से खत्म होती जा रही है। अगर यही सिलसिला चलता रहा तो कुछ और सालों में इस उत्कृष्ट लोकनाट्य का खत्म हो जाना तय है।

विषयवस्तु का विश्लेषण – इस प्रोजेक्ट का उदेश्य मिथिलांचल के लोकनाट्य नाच का संरक्षन और संवर्धन करना है। इसके लिए चार आयाम तय किए है जो एक दूसरे के पृष्ठपोषक है।

1. सीतामाढ़ी जिला के नाचकर्मियों का पता ठिकाना
   (Identification of Nach practicener in sitamarhi district)

इस प्रोजेक्ट का पहला कदम है सितामढ़ी जिले के उन तमाम नाच कर्मियों का पता ठिकाना एकत्रित करना जो–

- पारंपरिक रुप से नाच के कलाकार है,
- वे कलाकर जो किसी कारणवश नाच करना छोड़ चुके है या अपनी भागीदारी कम कर दी है।
- वो कलाकार जो नए है।

इसके साथ ही हर एक कलाकार के कुछ नीजि सुचनाओं और समस्याओं को जिसे वे साझा करना चाहते है का विश्लेषण कर उसका निचोड़ निकालना पहले आयाम का हिस्सा है। जो

नाचकर्मियों के साथ हमारा सहज संबंध बनाने की दिशा में मददगार होगा। इस डाटा संग्रह की संभावित प्रारुप की एक प्रति संलग्न कर रहा हूँ।

2. पिछले पच्चीस सालों में सबसे अधिक प्रस्तुत्य लोकगाथएँ एवं उसका सामाजिक सरोकार

(The most popular folklores has been performed in last 25 years and its social concern)

परंपरागत तौर पर कई लोकगाथाएँ नाच में प्रस्तुत किए जाते रहे है। ''राजा सलहेस'', लोरिक, दीना–भद्री, दुलरा दयाल, हिरणी–बिरणी, शीत–बसंत, रानी सारंगा, सती बिहुला, जया विषहर, कुंवर वृजभान, राजा भरथरी, कुसमा हरण आदि। इसके अलावा कई गाथाएं है जो कथा गायन परंपरा में प्रस्तुत किए जाते है जैसे– कारिक गोबिन, लालबन बाबा, गरिवन भुईया, फेकूराम आदि।

इनमें से कुछ गाथाओं का संबंध जाति विशेष से है तथा कुछ का संबंध विभिन्न पंथ तथा संप्रदाय से है। जाति विशेष गाथाओं में राजा सलहेस (दुसाध जाति) लोरिक (यादव) दीना–भद्री मुसहर तथा दुलरा दयाल (मलाह जाति) से संबंध रखते है। वस्तुतः ये जातीय शौर्यगाथाएँ है। ये सभी महानायक तत्कालीन समाज की बुराइयों को अपने बल से खत्म कर अपने–अपने जाति में देवत्व को प्राप्त हुए। साथ ही इनका सामाजिक सरोकार भी उतना ही महत्वपूर्ण है। जैसे– दीना–भद्री का सारा संघर्ष बंधुआ मजदूरी के खिलाफ रहा है। लोरिक का संघर्ष सामंतवादी प्रथा के खिलाफ रहा है। राजा सलहेस राजनीतिक सौहार्द कायम करने का पक्षधर रहा है, तो दुलरा दयाल तंत्र–मंत्र का समाज में गलत अभ्यास के खिलाफ मोर्चा संभालता है।

विभिन्न पंथ से संबंधित गाथाओं में 'गोपीचंद' समाज में गोरखपंथी विचारधारा के प्रचार प्रसार, विरोध तथा संधर्ष की गाथा है। ''रानी सारंगा'' का संबंध पर्नजन्म से है जो विभिन्न पंथों के अलौकिक दुनियां संबंधी मत को संपुष्ट करता है। ''कुंवर वृजभान'' और राजा

भरथरी'' वैष्णव संप्रदाय का पृष्ठपोषक है। जया विषहर और सति बिहुला समाज में नाग देवता और विषहर देवता के विरोध और संधर्ष की दास्तान है।

इसके अलावा कई और गाथाएं है जिन्हें कथा–गाायन के माध्यम से प्रस्तुत किए जाते है और कई गाथाएँ भक्तई (मिथिलांचल के गृहस्थ द्वारा अपने गृह देवता की विशेष पूजा के अवसर पर एक अनुष्ठान अनिवार्य रुप से करवाया जाता है जिसे भक्तई कहा जाता है इसे महराई भी कहा जाता है।) के माध्यम से गाए जाते है।

इस तरह से पूरे मिथिलांचल में लोकगाथाओं की एक लंबी फेहरिस्त है, जो कि मौखिक परंपरा में है। और नाच के माध्यम से प्रस्तुत किए जाते है।

विगत वर्षों में नाच प्रस्तुति में कमी आने के साथ–साथ कई लोकगाथाओं का मंचन बंद हो गया है। मैंने अपने पी0 एच0 डी0 शोध के दौरान ये पाया कि सत्तर और अस्सी के दशक में मिथिलांचल में नाच की बड़ी धूम थी। अलग–अलग नाच दल अलग–अलग लोकगाथओं के विशिष्ट प्रदर्शक थे। आज भी ऐसा ही है। जैसे राजा सलहेस का नाच देखना हो तो मधुबनी जिला के रैयाम के बिलटु सहनी का नाच दल बुलवाया जाए। हिरणी–बिरणी का नाच देखना हो तो सितामाढ़ी जिला के कुसमारी गांव का नाच दल बुलवाया जाए। आज भी ऐसा ही है। फर्क सिर्फ इतना पड़ा है कि नब्बे के दशक में बिहार से लोगों का जो जबरदस्त पलायन हुआ है उसकी वजह से कई नाच दल विघटित हो गए या फिर पूरी तरह से खत्म हो गए। सलहेस, वृजभान, कुसमा, विषहर या रानी सारंगा जैसे महत्पूर्ण किरदार निभाने वाले कलाकार रोजी रोटी की तलाश में दिल्ली पंजाब को चल दिए। इससे बचे हुए नाचकर्मियों का मनोबल गिर गया। बहुत कम ऐसा दल बचा रह गया जो अपने दम पर दो–तीन रातों का नाच प्रदर्शन संभाल सके। इस समस्या पर काबू पाने के लिए दो–तीन नाच दलों के कलाकार आपस में मिलकर प्रदर्शन का जिम्मा स्वीकारते है। लेकिन इसमें वो बात नहीं बनती। एक तो सभी दल अपने घुरंघर कलाकारों की ज़बरदस्त कमी महसूस करते है। दूसरा मिलकर करने में कथानकों को तोड़ना मरोड़ना पड़ता है, जिससे मूल स्वरुप को छति पहूंचती है।

इस बाबत ये पता लगाना अतिआवश्यकक है कि सीतामाढ़ी जिला में जो नाच दल सक्रिय है वो कौन– कौन से लोकगाथाओं का प्रदर्शन कर रहे है। ये इस बात पर भी निर्भर करेगा कि लोगों के तरफ से किन लोकगाथाओं की मांग ज्यादा हो रही है। जो मांग की जा

रही है क्या नाच दल उसे उपलब्ध कराने में सक्षम है ? अगर सक्षम है तो उसका स्तर क्या है ? एक दूसरी स्थिति भी हो सकती है वो ये कि क्या दर्शक उपलब्ध कथानकों में से ही चुनने को मजबूर है ? इन सब तथ्यों पर गंभीरता से विचार करना जरुरी है। कारण

- लोग जो पसंद करेंगे नाचकर्मी वही प्रस्तुत करना चाहेगा।
- जो प्रस्तुत हो रहा है निश्चत तौर पर उसी में छेड़–छाड़ हुआ है।
- जो पसंद किया जा रहा है उसी के पूर्न अवलोकन की आवश्यकता है। ताकि उसकी प्रस्तुति को अधिक सबल बनाया जा सके।

इसलिए ऐसे कथानकों को चिन्हित करके उसके सामाजिक सरोकार का विश्लेषण अनिवार्य है ताकि नाचकर्मियों द्वारा नाच को जीवित रखने के जदोजहद में जो महत्वपूर्ण तथ्य कहीं पीछे छूट गया है या जो विकृत हो गया है उसे फिर से पूर्णजीवित किया जा सके।

3. युवाओं की सांस्कृतिक चेतना और नाच की प्रासंगिकता

(Cultural consciousness of the youth and the relevance of Nach practice)

यद्यपि नाच के संरक्षण और संवर्धन में पूरे समाज का योगदान अनिवार्य है। तथापि परंपरिक कला के संरक्षण और संवर्धन में युवा पीढ़ी को नजरअंदाज करना एक भारी भूल होगी। इसमें कोई दो राय नहीं है कि युवा पीढ़ी के सम्पूर्ण चेतना में जबर्दश्त बदलाब हुआ है और हो रहा है। विद्वान ये मानते है कि वैश्वीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति ने युवाओं की चेतना को पथभ्रष्ट (deviate) और विभ्रमित (distracte) किया है। इस संबंध में सांस्कृतिक रुप से उच्च कोटि के पारंपरिक कलाओं की वकालत करते हुए विद्वजन कहते है कि– "सांस्कृतिक रुप से संपन्न पारंपरिक कलाएं एवं उसकी निरंतर प्रस्तुति युवाओं की स्वस्थ्य, संतुलित और साकारात्मक सोच के निर्माण और विकास के लिए अनिवार्य है। साथ ही इस तरह की सांस्कृतिक गतिविधियां युवाओं को उपभेक्तावाद, आत्मकेन्द्रियता, तथा वैश्वीकरण के चंगुल से निकलने में सहायक हो सकेगा।"

"Enactment of such culturally rich plays and performances are essential and inevitable for the healthy, balanced and all-round growth of the psyche of the youth. In addition exposure to such cultural events and activities will lead to de-entrapping of their mind from that of consumerism, ego-centricism, capitalism and devouring globalization."

लेकिन ये होगा कैसे ? पारंपरिक कलाओं के साथ कुछ आधारभूत समस्याएं है। ये समस्या शास्त्रीय (classical) कलाओं के साथ भी है। जैसे नाच के संदर्भ में–

- सबसे पहले तो युवा नाच के प्रदर्शन स्थल तक आते नहीं है।
- आते है तो टिकते नहीं। कारण अपने आप को न कथानक के साथ तारतम्य बैठा पाते है और ना ही प्रस्तुति तकनीक से रोमांचित हो पाते है। और प्रस्तुति को भोंडा शोर–शराबा कह कर वहां से खिसक लेते है।
- युवाओं में पारंपरिक कला को देखने की सवभाविक रुचि खत्म होती जा रही है।
- मध्यमवर्गीय युवा जिनकी शिक्षा दीक्षा शहरों में हो रही है नाच जैसे पारंपरिक कलाओं को निकृष्ट मानते है। परिवार और समाज की नजर में भी शहरी शिक्षा दीक्षा और रहन सहन तथा नाच जैसे पारंपरिक कला को देखने की दिलचस्पी में विरोधाभास की स्थिति बनी हुई है।
- किसान और मजदूर वर्ग भी जो अपने बच्चों को माध्यमिक या उच्च शिक्षा दिलवा पाने में सक्षम हो रहे है मध्यमवर्गीय परिवारों की प्रोक्सी (proxy) करते हुए अपने युवाओं को ऐसी कलाओं से रु–ब–रु होने से राकते है।

एक और महत्वपूर्ण तथ्य की ओर ध्यान दिलाना चाहूंगा। पिछले कुछ सालों में ग्रामीण और कस्बाई इलाकों में त्योहारों पर होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन की जिम्मेदारी युवाओं ने संभाल ली है। और दुर्भागयवश युवाओं में सांस्कृतिक अभिज्ञता की भारी कमी होने के कारण वे इन कलाओं में दिल्चस्पी नहीं दिखाते। बात इस हद तक बद्तर है कि ग्रामीण और कस्बाई युवाओं में कला की अवधारणा ही नदातर है।

पारंपरिक कलाओं के संरक्षण और संवर्धन के मुहिम में युवा संबंधी इस समस्या पर गंभीरता से विचार करना आवश्यक है। युवाओं का पारंपरिक कलाओं के साथ जुड़ाव पैदा करना एक बड़ी चुनौती है। इसके लिए हर संभव कोशिश की दरकार है।

पिछले एक दशक में लोकसंस्कृति पर काफी बहसें होती रही है। जिसमें एक तरफ लोककलाओं को एक निश्चित अपरिवर्तित रुप में सहजने तथा दूसरी तरफ लोककलाओं के मूल आधार तत्व निरंतरता, बहुलता, विकासमार्गीयता, जीवन और उसके अनुभव से उसके उभयपक्षीय रिश्ते, के बीच उपस्थित विरोधभास को समझने की कोशिश की गई है। कमल नयन काबरा अपने आलेख ''संस्कृति विमर्श : उलझने और जिज्ञासाएं'' में लोकसंस्कृति पर विद्वतापूर्ण चर्चा करते हुए कहते है– ''संस्कृति के मूल तत्वों और जीवन से जूड़े, उससे उपजे और उसके साथ पल्लवित होते अमूर्त और व्यवहारिक स्वरुप को अवश्य अघात लगता होगा जब प्राचीन बनाम आधुनिक संस्कृति विवाद, बहस और संघर्षों का विषय बना लिया जाता है। ऐसे में लगता है कि सांस्कृतिक निरंतरता, बहुलता, विकासमार्गीयता, जीवन और उसके अनुभवों से उसके उभयपक्षीय रिश्ते आदि शायद भूला दिये गये हों। बहुदा ये देखा गया है कि कई बार किसी संगठित, सीमाबद्ध संस्थापित मान्यताओं वाले शास्त्रीय अथवा पोथियों में धर्म के साथ एक निश्चित, अपरिवर्तित और अपरिवर्तनीय संस्कृति को जोड़ दिया गया है। कई बार इसे राष्ट्र–राज्य के साथ भी नत्थी कर दिया जाता है। साथ ही सामाजिक अनुभवों–अवधारणओं–अनुभूतियों और एक ओर उन सबकी विरासत तथा दूसरी ओर उनके सतत परिवर्तनीय प्रस्फुटन आदि को, बिना उसका जायजा लिये उसे कुछ अपने से भिन्न 'धर्म' के साथ नाभि–नाल संबंध की तरह जुड़ा हुआ मान लिया जाता है। सांस्कृतिक आदान–प्रदान द्वारा सारी मानवता की एक साझी थाती भी तो है, जो सबकुछ शायद न हो, किन्तु वह कुछ भी नहीं है, यह भी तो सच नहीं है। इन प्रकियाओं के साथ अपनी संस्कृति की श्रेष्ठता–सार्वभौमिकता का दावा और गुमान यह सोचने को विवश कर देता है कि कहीं संस्कृति के नाम पर हम किसी दूसरी अवधारणा, मंशा, रणनीति यहां तक कि चालबाजी को चलाने या छिपाने की कोशिश तो नहीं कर रहे है। संस्कृति को अपनी सीमित हित साधना का

जरिया तो नहीं बना लिया गया है।'' (संदर्भ– आलेख '' संस्कृति विमर्श : उलझनें और जिज्ञासाएँ'' कमल नयन काबरा, मड़ई 2009, पृष्ठ संख्या – 1, प्रकाशन– रावत नाच महोत्सव समिति बिलासपुर)

काबरा जी इस ओर ईशारा करते दिख रहे है कि जहां लोकसंस्कृति का मूल स्वभाव ही निरंतरता, बहुलता, विकासमार्गीयता तथा जीवन और उसके अनुभवों के उभयपक्षीय रिश्ते है तो ऐसे में लोकसंस्कृति को किसी खुंटे से बांधना कहां तक न्यायसंगत है। अर्थात लोकसंस्कृति का परिवर्तनशील होना हर तरह से लाज़मी है। तो दूसरी तरफ परिवर्तनों को लेकर गहरी आशंका भी जताते हुए आगे लिखते है– '' पिछले कुछ दशक सारे संसार में अपेक्षाकृत बहुत व्यापक और गहरे परिवर्तनों वाले रहे है। इन तीव्र और बहुआयामी बदलावों का सिलसिला कुछ ऐसे चल रहा है कि परिवर्तनों का एक दौर जितनी तेजी से बढ़ता है अगले दौर के उतने ही और अधिक तेजी से दौड़ पड़ने का पक्का भरोसा हो जाता है, उसकी आधारभूमि तैयार हो जाती है, कन्तु कैसे तय होती है इन बदलावों की प्रकृति, उनकी दिशा, उनके कारक प्रभाव आदि ? क्या यथार्थ को टुकड़ों में बांटना उन्हें असंबंधित रखना अपने आप में एक ''संस्कृति'' नहीं बन गई है। सवाल उठाया जा सकता है और कई बार तो कई संदर्भो में यह मसला तो स्पष्ट खुलासा मांगने के लिए आगे आया भी है कि क्या ये परिवर्तन संस्कृति जन्य हैं, कम से कम एक उत्प्रेरक सार तत्व, गतिमयता देने वाले प्रभाव के रुप में? (संदर्भ– आलेख '' संस्कृति विमर्श : उलझनें और जिज्ञासाएँ'' कमल नयन काबरा, मड़ई 2009, पृष्ठ संख्या – 1, प्रकाशन– रावत नाच महोत्सव समिति बिलासपुर)

सवाल महत्वपूर्ण है। उतना ही महत्वपूर्ण है उस जोखिम को समझना जो लोकलाओं के उत्थान में निहित है। जोखिम अनिवार्य है। हर स्थिति में लोकनाट्यों को, खासकर उत्तर–मध्य भारत के लोकनाट्यों को कटधरे (trial) में रखना होगा। इन लोकनाट्यों के माध्यम से जिन सामाजिक मूल्यों की पैरवी की जाती रही है उन्हें कटधरे (trial) में लाना ही होगा। मसलन औरत की सती या देवी संबंधी अवधारणा को ट्रायल पर रखना ही होगा। इन लोकनाट्यों को महिला संबंधी वर्तमान अवधारणाओं को टटोलना ही होगा। ये इन लोकनाट्यों की अग्रगामी स्वरुप की अनिवार्य शर्त है। जो युवाओं को अपने तक खींच कर ला सके इसके लिए ज़रुरी है कि नाच जैसे लोकनाट्य, संस्कृति संबंधी इस अवधारणा को पुष्ट करे है कि ''संस्कृति

बहुरुपी, विविधतामय, जीवन से निकली, उसे परिभाषित करती विभिन्न समुदायों के लिए साझी विरासत और आज प्रभावी तथा आज के अनुभवों अनुभूतियों से समृद्ध होती लौकिक तथा अमूर्त मूल्यों, कसौटियों उदेश्यों, आदर्शों से उभयपक्षीय जुड़ाव वाली सक्रिय प्रक्रिया और थाती है।''

नाट्य क्षेत्र में जहां तक मैं समझ सका हूं भिखारी ठाकुर और हबीब तनवीर दो ऐसे रंग विसारद हुए हैं जो लोककला संबंधी इस अवधारणा पर खड़े उतर सके है, स्वयं लोककला की परिभाषा बन सके है, लोक परंपरा का उदाहरण बन सके है।

निश्चय ही नाच के संदर्भ में गंभीर संस्कृति विमर्श के साथ साथ मूर्त उदाहरण (live example) बनाना अति आवश्यक है।

4. नाच प्रस्तुति के गुणात्मक विकास की संभावना

(Possibility of the quality enrichment of nach practice)

प्रोजेक्ट के चौथे आयाम में किसी एक नाच दल के साथ उसके गुणात्मक विकास के लिए आवश्यक ज़रुरते मुहैया कराकर तथा उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर किसी एक प्रस्तुति के कथानक का संपादन, गीत संगीत का पुर्नसंयोजन तथा प्रस्तुति के तकनीकि पक्षों का पुर्नअवलोकन द्वारा नाच की तकनीकि विकास की दिशा को रेखांकित करना मुख्य उदेश्य है। इसकी प्रस्तुति प्रभाव का विश्लेषण कर इसका अनुगमन (follow-up) किया जाएगा।

प्रोजेक्ट की कार्य योजना – इस प्रोजेक्ट की समयाअवधि सोलह महिने है। जिसे तीन चरण में पूरा किया जाएगा।

- तीन महिना – नाचकर्मयों तथा नाचदलों का डाटा संग्रह कर अकादमी को सुपूर्द किया जाएगा।

- नौ महिने – ''पिछले पच्चीस सालों में सबसे अधिक प्रस्तुत्य लोकगाथएं एवं उसका सामाजिक सरोकार'' तथा युवाओं की सांस्कृतिक चेतना और नाच की प्रासंगिकता'' का गंभीर निरीक्षण और परीक्षण किया जाएगा। इसे एक शोध प्रबंध के रुप में अकादमी को सौंपा जाएगा।
- तीन महिना – एक नाच दल के साथ एक प्रस्तुति का पुर्नसंयोजन किया जाएगा। इसकी रिपोर्ट डॉकयूमेन्टेशन सहित अकादमी को सुपूर्द किया जाएगा।
- एक महिना – (project bind-up)